गढ़वाल के शिल्पकार–पेशा उनके द्वारा निर्मित कुछ धार्मिक तथा ऐतिहासिक कृतियां एवं उनकी शक्तियां

डॉ0 रजनी गुसांई
असि0 प्रोफे0, रा0 स्ना0 महाविद्यालय, नई टिहरी, उत्तराखण्ड

सारांश

शिवजी की भूमि माने जाने वाले हिमालयी पर्वत क्षेत्र में केदारखण्ड (वर्तमान में गढ़वाल मण्डल) प्राचीन काल से ही पवित्र क्षेत्र माना जाता रहा है। इसका पौराणिक नाम सुमेरू पर्वत तथा शास्त्रों में इसे देवभूमि का नाम दिया गया है। इतिहास द्वारा विदित होता है कि आर्यों के आगमन से पूर्व तीन आदि जातियां भारत में निवास करती थी। सबसे पुरानी जाति नीग्रिटो कहलाते थे। दूसरी जाति प्राटोआस्ट्रेलायड पायी गयी है, तीसरी जाति के रूप में भूमध्यसागरीय देशों से द्रविड़ कहे जाने वाले लोग थे। शिल्पकार प्राचीन आदिम निवासी किरात, कुलिन्द, तंगण आदि जातियों की सन्तान है।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः
डॉ0 रजनी गुसांई

गढ़वाल के शिल्पकार–पेशा उनके द्वारा निर्मित कुछ धार्मिक तथा ऐतिहासिक कृतियां एवं उनकी शक्तियां

शोध मंथन, जून 2018,
पेज सं0 84–91

Article No. 13
http://anubooks.com
?page_id=581

प्रस्तावना

शिवजी की भूमि माने जाने वाले हिमालयी पर्वत क्षेत्र में केदारखण्ड (वर्तमान में गढ़वाल मण्डल) प्राचीन काल से ही पवित्र क्षेत्र माना जाता रहा है। इसका पौराणिक नाम सुमेरू पर्वत तथा शास्त्रों में इसे देवभूमि का नाम दिया गया है। इस भूमि को केदार–खण्ड नाम से भी जाना जाता है। इतिहासकारों के अनुसार हिमालय के अन्य भागों में हूण, खस, दस्यु, किरात, कमयु, शक, नाग, कंबोज, यवन आदि जातियों के लोगों के अपने–अपने राज्य व राजा रहा करते थे।

इतिहास द्वारा विदित होता है कि आर्यों के आगमन से पूर्व तीन आदि जातियां भारत में निवास करती थी। सबसे पुरानी जाति नीग्रिटो कहलाते थे। दूसरी जाति प्राटोआस्ट्रेलायड पायी गयी है, तीसरी जाति के रूप में भूमध्यसागरीय देशों से द्रविड़ कहे जाने वाले लोग थे। शिल्पकार प्राचीन आदिम निवासी किरात, कुलिन्द, तंगण आदि जातियों की सन्तान है।

शोध प्रारूप

प्रस्तुत अध्ययन हेतु, लघु शोधरिपोर्ट, शोधग्रन्थ, शोध पत्र, पत्र–पत्रिकायें, समाचार पत्र, लोक संस्कृति से सम्बन्धित पुस्तकें आदि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन का उद्देश्य गढ़वाल के शिल्पकार उनका पेशा उनके द्वारा निर्मित, धार्मिक तथा ऐतिहासिक कृतियां, उनकी शाक्तियां उनकी उत्पत्ति का इतिहास आदि का वर्णन किया गया है।

शिल्पकारों की जातियों एवं उनके पेशों का विवरण

1. नाई शिल्पकार– हजामत बनाने का काम करते है।
2. कुम्हार– मिट्टी के बर्तन बनाने का काम करते है।
3. धोबी– कपड़ा धोने का काम करते है।
4. कोली– कपड़ा बुनने व कोल्हू चलाने का काम करते है।
5. दर्जी– कपड़े सीने का काम करते है।
6. लोहार– लोहे का काम करते है।
7. बेड़ा या वादी– ये नाचने गाने का काम करते है।
8. रूड़िया– यह चटाई और बांस या रिंगाल के बर्तन बनाने का काम करते है।
9. धुनार– नदियों में झूला बाधने का कार्य नाव चलाने का कार्य एवं मछली पकड़ने का कार्य करते है।
10. ओड़– मकान की चिनाई का काम एवं लकड़ी का काम करते है।
11. औजी या बाजगी– यह लोग मन्दिरों के बाहर शादी ब्याह पर तथा शुभ कार्यों में बाजा, ढोल बजाने का कार्य करते है।
12. हलिया– यह हल जोतने का कार्य करते है।
13. चमान– यह चमड़े का काम करते है तथा जूते–चप्पल आदि जागर आदि गाने का कार्य करते है।
14. जागरी– यह जागर आदि गाने का कार्य करते है।

शिल्पकारों द्वारा निर्मित कुछ ऐतिहासिक कृतियों का परिचय

गढ़वाल के पुराने ग्रामों में आज भी प्राचीन काल के मकान दिखायी देते है जिनकी तिबारियां, खोलियां, नीमदारियां, छज्जों, आंगन चौक आदि में शिल्पकारों की पत्थर एवं लकड़ी पर कलात्मक रचनाओं के दर्शन होते है। इनके द्वारा निर्मित कुछ निम्न मन्दिर, स्तम्भ आदि है।

1. अगस्तमुनि में महर्षि अगस्त्य का भव्य एवं प्राचीन मन्दिा, जिसके गर्भगृह में अष्टधातु की द्विभुज मूर्ति है।
2. गुप्तकाशी में विश्वनाथ मन्दिर, जिसमें शिवलिंग एवं नदी की मूर्ति स्थापित है। दूसरा अर्हनारीश्वर का मन्दिर, गुप्तकाशी से आगे नाला गाँव में प्राचीन बौद्ध स्तूप, गरूड़ तथा भगवती का मन्दिर।
3. नारायण कोटि के पास लक्ष्मीनारायण के मन्दिर सहित लगभग दो दर्जन छोटे–बड़े मन्दिर।
4. गौरीकुण्ड में गौरी मन्दिर, जिसमें गौरी, शिव, राधा एवं कृष्णा की मूर्तियां स्थापित है।
5. केदारधाम में शिवजी का बड़े–बड़े तराशे गये ग्रेनाइट के पत्थरों से 8वीं शताब्दी में निर्मित विशाल एवं भव्य मन्दिर एवं विशाल परिसर गर्भग्रह में भैंस की पीठ के आकार की एक शिला स्थापित है तथा इसके बाहर वाले मंडप में पाण्डवों तथा द्रौपदी की मूर्तियां स्थापित है। यह भगवान शिव के बाहर ज्योर्तिलिंगो में से एक है।
6. ऊखीमठ का भव्य ओंकारेश्वर मन्दिा यहां शिवलिंग के अतिरिक्त पार्वती उषा, अनिरूद्ध, भैरव, गणेश सहित अनेक देवताओं की मूर्तियां स्थापित है। यहां पर वाणासुर की पुत्री उषा ने छिपकर अनिरूद्ध से विवाह किया।
7. त्रियुगीनारायण में भगवान विष्णु का मन्दिर और अनेक कुण्ड जहां पर शिव पार्वती का विवाह सम्पन्न हुआ था। यहां एक हवन कुण्ड में अखण्ड अग्नि प्रज्वलित है, जिसकी लौ शिव पार्वती के विवाह के साक्षी के रूप में निरंतर जलती रहती है।
8. तुंगनाथ में तराशे गये पत्थरों से निर्मित शिव मन्दिर बाहर नदी तथा देवालयों में पार्वती एवं भैरव की मूर्तिया। यहां पर शिवजी की भुजाओं की पूजा की जाती है।
9. मक्कू गाँव में तुगनाथ का भव्य मन्दिर यहां पर तुंगनाथ की शीतकाल में पूजा की जाती है।
10. मंडल के समीप अनुसूया देवी का मन्दिर है।
11. गोपेश्वर का विशाल एवं भव्य शिव मन्दिर है।
12. गौचर के निकट धारीनगर में रघुनाथ जी का मन्दिर है।
13. कर्णप्रयाग में माँ उमादेवी का मन्दिर है।
14. लंगासू में चण्डिका मन्दिर एवं कालेश्वर में काल भैरव का मन्दिर है।
15. नंदप्रयाग में नंदा भगवती एव वासुदेव का मन्दिर है।
16. सिमली के वैष्णव मन्दिर समूह।
17. ग्वालदम के पास बधाणगढ़ी का मन्दिर।
18. उर्गम के समीप भगवान कल्पेश्वर का मन्दिर।

19. जोशीमठ का नृसिंह का मन्दिर।
20. जोशीमठ का वासुदेवी मन्दिा एवं वासुदेव की पाषण प्रतिमा।
21. जोशीमठ मलारी मार्ग पर माँ नंदादेवी का सिद्धपीठ मन्दिर।
22. विष्णु प्रयाग में भगवान विष्णु का मन्दिर।
23. हेमकुण्ड का लक्ष्मण मन्दिर।
24. पांडुकेश्वर का योग बदरी विशाल मन्दिर।
25. बद्रिकाश्रम में भगवान बद्रीनाथ जी का वर्तमान भव्य मन्दिर।
26. रूद्र प्रयाग में अलकनन्द और मंदाकिनी नदियों के संगम के समीप रूद्रनाथ एवं लक्ष्मी नारायण जी का मन्दिर।
27. रूद्रप्रयाग के समीप कोटेश्वर मन्दिर।
28. तिलवाड़ा सूर्यप्रयाग में सूर्य मन्दिर।
29. आदिबदरी मन्दिर समूह।
30. श्रीनगर का कमलेश्वर मन्दिर।
31. कीर्तिनगर के पास बिल्वकेदार मन्दिर।
32. देवलगढ़ का शक्ति मन्दिर।
33. देवप्रयाग का रघूनाथ मन्दिर।
34. पैठाणी का शिव मन्दिर।
35. बूढ़ा भरसार का धडियाल मन्दिर।
36. पौड़ी में क्यूंकालेश्वर मन्दिर।
37. सितोनस्यू देवल का मन्दिर समूह।
38. देवप्रयाग के पास पलेठी का सूर्य मन्दिर।
39. लाखमण्डल का शिव मन्दिर।
40. हनोल का महासू शिव मन्दिर।
41. ऋषिकेश का भरत मन्दिर।
42. वीरभद्र का शिव मन्दिर।
43. हरिद्वारा का बिल्केश्वरनाथ महादेव मन्दिर।
44. हरिद्वार में मनसा देवी मन्दिर।
45. हरिद्वार में चण्डी देवी मन्दिर।
46. हरिद्वार में गंगा देवी मन्दिर।
47. तपोवन में लक्ष्मण मन्दिर।
48. उत्तरकाशी में काशी विश्वनाथ मन्दिर।
49. गंगोत्री में गंगा भागीरथी का मन्दिर।
50. पांडुकेश्वर का योगध्यान बद्री मन्दिर।
51. मदमहेश्वर में प्राचीन शिव मन्दिर।

शिल्पकारों द्वारा निर्मित कुछ गढ़ों एवं दुर्गो का विवरण

केदार खण्ड या कुलिंद देश को सन् 1500 में गढ़वाल का नाम दिया गया था। कुलिन्दों के काल में केदारखण्ड में छोटे–छोटे राजवंश शासन करते थे जो अपने समतों सहित इन्हीं राज्यों में रहते थे। इन कुलिंद राजाओं ने अपनी राजधानी एवं उपावसीय महलों के लिए खूबसरती से तराशे गये बड़े–बड़े पत्थरों से मजबूत और अभेधकिले बनाये गये थे। इन किलों को तब गढ़ कहा जाता था और सुरक्षा की दृष्टि से ये गढ़ अधिकतर विभिन्न पर्वत शिखरों पर बनाये गये थे। इतिहासकारों के अनुसार केवल 52 गढ़ों की ही पहचान हो पाई है।

जिनके अवशेष आज भी देवभूमी में जगह–जगह दिखायी देते है। अधिक गढ़ो वाला देश होने के कारण इस देश को गढ़देश या गढ़वाल नाम दिया जाता है। इन गढ़ो को वर्तमान शिल्पकारों के पूर्वजों ने बनाया था इनकी भव्यता एवं कलात्मकता का परिचय आज भी इनके भग्वानवशेषों में स्पष्ट रूप से दिखायी देता है।

1. नागपुर में नागपुर गढ़।
2. बछणस्यूं में कोली गढ़।
3. बद्रीनाथ के पास खाड़ गढ़।
4. फल्दाकोट में फलयाण गढ़।
5. बांगर में बांगर गढ़।
6. कुइली में कुइली गढ़।
7. भरपूर में भरपूर गढ़।
8. कुजणी में कुजंणी गढ़।
9. सिलगढ़ में सिलगढ़।
10. रवांई में मुंगारा गढ़।
11. रैका में रैका गढ़।
12. रमोली में मौल्यण गढ़।
13. उदयपुर में उदयपुर गढ।
14. देहरादून में नाला गढ़।
15. रवांई में सांकरी गढ़।
16. शिमला के पास रामी गढ़।
17. जौनपुर में रवाल्टा गढ़।
18. तैली चांदपुर में चौडा गढ़।
19. सीली चादंपुर में चौडा गढ।
20. तोपालो का तोप गढ।
21. रानीगढ में राणी गढ।
22. सलाण में श्री गुरू गढ़।
23. बधाण में बधाणी गढ़।
24. लोहता में लोहता गढ़।

25. दशोली में दशोली गढ़।
26. नागपुर में कंडारी गढ़।
27. इडवालस्यूं में धौना गढ़।
28. कुंजणी में रतन गढ़।
29. श्रीनगर के पास ऐरासू गढ़।
30. रवांई बडकोट में इंडिया गढ़।
31. लंगूर पट्टी में लंगूर गढ़।
32. गंगा सलांणा में बाग गढ़।
33. मल्ला ढांगू में गढ़कोट गढ़।
34. टकनौर में गंढतांग गढ़।
35. बनगढ़स्यू में बनगढ़ गढ़।
36. भरदार में भरदार गढ़।
37. चौंदकोट में चौंदकोट गढ़।
38. कटलस्यूं में नयालगढ़।
39. अजमेर पट्टी में अजमेर गढ़।
40. रावतस्यूं पट्टी में कांडा गढ़।
41. साबली खाटली में साबली गढ़।
42. बदलपुर में बदलपुर गढ़।
43. नैलचामी में संगला गढ़।
44. गुजडु में गुजड़ गढ़।
45. जौनपुर में जौट गढ़।
46. चलणस्यू में देवलगढ़।
47. लोदों का लोदगढ़।
48. भैरव गढ़।
49. डोडरा क्वांरा गढ़।
50. भुवन गढ़।
51. नयार गढ़।
52. रवैरा गढ़ आदि।

शिल्पकारों में दैवी शक्तियों का अवतरण

अः– बूखाल की कालिंका– यह भगवती स्वरूप देवी थलीसैंण विकास खण्ड की जानी मानी देवी है, इनकी पूजा मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष में बूंखाल नामक स्थान पर की जाती है। दूर–दूर से 1600 के आस–पास पट्टी कंडास्यू के चोपड़ा गाँव के शिल्पकार निवासी सियाराम लोहार के धर पर एक कन्या का जन्म हुआ था। यह कन्या काले वर्ण की थी। सियाराम ने उसकी मंगनी छोटी उम्र में पास की ही नलई नामक गाँव कर दी के ग्वाल बालों ने एक गढ्ढा खोदा और उस बालिका को जीवित उसमें रख दिया तथा उसके आस–पास अपने पशुओं के कान काटकर उनका खून उस बालिका के चारों ओर छिड़कर नाचने लगे। तब उन्होंने इस बालिका को वहीं बंद कर

दिया। शाम को सिया राम, बेटी को न पाकर परेशान हो उठा। ग्वाल बालों ने डर के मारे हकीकत छिपाकर रखी, लड़की को खूब तलाशा गया, मगर उसकी तो दबकर मौत हो चुकी थी। इस प्रकार यह कालीरूप में बूंखाल की कालिंका नाम से प्रसिद्ध हुयी।

धारी देवी

यह कलियासौड़ में अलकनन्दा नदी के किनारे पर स्थित है। इसकी स्थापना धारी गाँव के धुनारों ने की तथा इसकी पूजा–अर्चना का दायित्व धारी गाँव के पांडे जाति के ब्राहमण ने संभाला। देवी के भव्य मन्दिर में देश कोने–कोने से श्रद्वालू आते है। कहा जाता है कि बहुत समय पहले रूद्रप्रयाग के कालीमठ गौरीकुण्ड क्षेत्र के निवासी किसी शिल्पकार के परिवार में एक कन्या ने जन्म लिया था। कन्या के जन्म लेने के बाद उसकी माता का देहांत हो गया। तब कन्या के पिता ने दूसरा विवाह किया जैसे–तैसे कन्या बड़ी होती गयी, वैसे उसकी सौतेली माँ उस कन्या से ईर्ष्या करने लगी। एक दिन उसने उस कन्या की गर्दन काट कर उसे मार दिया और मंदाकिनी नदी में फेंक दिया। कन्या बहते–बहते जब कलिया सौड़ के समीप धारी गाँव के पास पंहुची तब आधी रात में इसके शव ने नदी से ऊपर उठकर गाँव के कूंजू धुनार को अवाज लगाई कि वह उसे नदी से निकाल कर किनारे लगा दे। कुन्ज धुनार ने रात में ही अपनी नाव खोली और कन्या को निकालकर नाव में बैठाया। कन्या नाव से उतरकर नदी के बांये तट पर पत्थरों में बैठ गयी। उसने कुन्ज धुनार को बताया कि वह माँ भगवती की कृपा से कंलिका बन चुकी है, और अब वह वहीं पर रहेगी। कुजू ने तब नतमस्तक होकर देवी का छोटा सा मन्दिर बनाकर वहां पर स्थापित किया। देवी ने कहा कि वहां पर जब तक धारी की कालिंका का नाम रहेगा, तब तक गाँव के धुनार उसके मैती यानी मायके वाले कहलाते रहेंगे।

डौड़िया नरसिंग

यह शिल्पकारों का ऐतिहासिक गाँव सिमखेत है। यह देवता न्याय के रूप में भी अपना पूरा प्रभुत्व है। इस गाँव में लकड़ी पर नक्कासी वाली तिबारी एवं खोली वाला स्व0 माधो सिंह टमोटा का ऐतिहासिक मकान भी दर्शनीय है। इसी ग्राम के निवास स्व0 साका टम्टा इस जाति के प्राचीन पुरूष माने जाते है। ये तांबा, पीतल की बारी, गेडू, तौल, परात, गागर, भकार आदि बनाने की कला के माहिर थे। बताया जाता है कि एक बार ये अपने बनाये गये बर्तनों की दुकान लगायी। वहीं पर डौडिया दास नाम का कोई शिल्पकार परिवार रहता था जो विष्णु अवतार नृसिंह देवता का अनन्य भक्त था। जब नृसिंह देवता की पूजा होती थी, तब जसोलीघाट में एक वृहद मेले जैसा वातावरण बन जाता था। दूर–दूर से लोग देवता के दर्शनों के लिए आते थे। जिसमें देवता को भेंट स्वरूप नगदी के अलावा अनाज वगैरह का बहुत मात्रा में चढ़ावा आता था। जिससे डौंडिया दास की ऋद्वि–सिद्वी प्राप्त थी। एक बार साका टमोटा की पत्नी सीधा देवी भी इस मेले को देखने अपने पति के उसके मन में लालच आ गया। वह सोचने लगी कि काश किसी तरह नृसिंह देवता का स्थानीय पुजारी जस्सू दास हुआ करता था। सीधा ने अपने पति साका टमोटा को विश्वास में लेकर अपने दिल की बात जस्सू दास को बताई तो उसने एक तांबे की गागर के बदले नृसिंह देवता का एक त्रिशूल उसे दे दिया। बताते है कि जसोलीधाट में अपनी दुकान समेटकर जब चुपके से साका टमोटा अपनी पत्नी के साथ वापस अपने गाँव आ रहा था। तब

नरसिंह देवता अपने नये स्थान सिमरखेत का कर पहुंचे, तब त्रिशूल को सीधा देवी ने अपने मकान की तिवारी के ऊपर रख दिया। समय बीतने के साथ ही दोनों अपने तांबे पीतल के काम में इतना व्यस्त हो गये कि वे नरसिंह देवता एवं उनके त्रिशूल को भूल गये। बताते है कि तब चेताया कि वे देवता को उतनी दूर लाये थे। मगर उसे भूल गये। तब पुजारी बुलाकर साका टम्टा ने देवता को नचाया और अपने घर में देवता का स्थान बनाकर वह त्रिशूल वहां स्थापित किया। तब इस को डौंडिया नरसिंह के नाम से विख्यात है।

निष्कर्ष

उत्तराखण्ड की मूल जातियां तंगण एवं कुविदों को खस जाति के राजपूतों ने अपना दास बनाकर अछूत घोषित कर दिया था। निःसन्देह इन खस एवं आर्य जातियों के भय से दन तंगण व कुलिदों ने अपनी आजीविका चलाने हेतु निम्न श्रेणी के माने जाने वाले वे पेशे अपनाना प्रारम्भ किये जो पेशे इन आर्य लोगों की जीवन शैली के लिए जरूरी थे। वर्ण व्यवस्था का ये लोग विरोध न कर सके, क्योंकि अपने ही देश में अल्प–संख्यक हो चुके थे। डॉ0 एस0 के0 सिंह के अनुसार कुमांऊ एवं गढ़ावाल के निम्न जाति के लोगों को सन् 1925 में ब्रिटिश शासन काल में शिल्पकार कहे जाने की सरकारी मान्यता प्राप्त हुयी थी। इन शिल्पकारों के पास उच्च कोटि का शिल्पी हुनर था। गढ़वाल के पुराने ग्रामों में आज भी प्राचीन काल के मकान दिखायी देते है, जिनकी तिबारियों, खोलियों, डयौडालीयों, छज्जौं, आंगन, चौक आदि में शिल्पकारों की पत्थर एवं लकड़ी पर कलात्मक रचनाओं के दर्शन होते है। इनको देखकर देशी ही नहीं विदेशी भी आश्चर्य चकित हुये बिना नहीं रह पाते। गढ़वाल के मन्दिरों को कलात्मक रूप से निर्मित करने का श्रेय केवल तत्कालीन, कुलिया, तंगण मूल के शिल्पकारों को ही जाता है। स्वतंत्र भारत में इन्हे अनुसूचित जाति के नाम से पुकारा जाने लगा।

सन्दर्भ

1. प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, डॉ0 विमल चन्द्र पाण्डे पृष्ट 53,55
2. कुमांऊ का इतिहास बद्रीदत्त पाण्डे, **पृष्ठ 157**
3. गढ़वाल का इतिहास, हरिकृष्ण रतूड़ी, **पृष्ठ 90–92**
4. पीपुल ऑफ इण्डिया सिरीज, डॉ0 एस0 के0 सिंह **पृष्ठ 1184**
5. संस्कृति के पद्चिह्न, डॉ0 यशवंत सिंह कठोच **पृष्ठ 117**